बैंगन ले लूँ दो-चार?

गणपत तिवारी रामपुर गाँव में रहते थे। गाँव में सब्जी का बाजार तो लगता नहीं था। किसान जो भी सब्जी अपने खेतों में उगाते, लोग वहीं जाकर पैसा देते और सब्जी ले आते थे। जो सब्जी गाँव के खेतों में नहीं लगी होती, उसके लिए बहुत दूर चंदनपुर कस्बे में जाना पड़ता था।

एक दिन तिवारी जी की पत्नी रमा को बैंगन खाने की इच्छा हुई। उसने तिवारी जी से कहा, "आज बैंगन की सब्जी खाने का मन कर रहा है। तुम बैंगन लेकर आओ।"

तिवारी जी बैंगन लेने घर से निकल पड़े।

...ा किसी की वस्तु नहीं लेनी चाहिए। बच्चों को समझाएँ यदि किसी से कोई चीज़ या सामान लेना हो, तो ...हिए।

बैंगन ले लूँ दो-चार?

गणपत तिवारी रामपुर गाँव में रहते थे। गाँव में सब्जी का बाजार तो लगता नहीं था। किसान जो भी सब्जी अपने खेतों में उगाते, लोग वहीं जाकर पैसा देते और सब्जी ले आते थे। जो सब्जी गाँव के खेतों में नहीं लगी होती, उसके लिए बहुत दूर चंदनपुर कस्बे में जाना पड़ता था।

एक दिन तिवारी जी की पत्नी रमा को बैंगन खाने की इच्छा हुई। उसने तिवारी जी से कहा, "आज बैंगन की सब्जी खाने का मन कर रहा है। तुम बैंगन लेकर आओ।"

तिवारी जी बैंगन लेने घर से निकल पड़े।

ा किसी की वस्तु नहीं लेनी चाहिए। बच्चों को समझाएँ यदि किसी से कोई चीज़ या सामान लेना हो, तो
हिए।

गाँव के बाहर एक नदी बहती थी। उसी के किनारे कुछ खेतों में बैंगन ल पास जाकर खड़े हो गए। लेकिन वहाँ खेत का स्वामी नहीं था। तिवारी जी जाएँ?

आखिर तिवारी जी ने सोचा— खेत का मालिक नहीं है तो क्या हुआ? खेत तो है ना? खेत से ही पूछ लेता हूँ। तिवारी जी ने पुकारा— "खेत, ओ खेत!"

खेत तो बोल नहीं सकता था। वे स्वयं ही खेत बनकर बोले, "क्या कहते हो गणपत तिवारी?"

तिवारी जी ने फिर खेत से पूछा, "बैंगन ले लूँ दो-चार?"

खेत फिर भी नहीं बोला, तिवारी जी फिर खेत की ओर से बोले, "हाँ, हाँ! ले लो दस-बारह।"

तिवारी जी ने बैंगन तोड़े और घर ले जाकर पत्नी को दे दिए। रमा ने बैंगन का भरता बनाया और स्वाद लेकर दोनों ने मजे से खाया।

जरा बताओ

क्या आपने कभी बैंगन का भरता खाया है?

हाँ ☐ नहीं ☐

शब्द-अर्थ

तिवारी जी को बैंगन की सब्जी बहुत पसंद आई। वे दूसरे-तीसरे दिन जाते और खेत से पूछते— "खेत, ओ खेत! बैंगन ले लूँ दो-चार?" फिर स्वयं ही खेत बनकर कहते, "हाँ, हाँ! ले लो दस-बारह।"

जब खेत में बैंगन कम होने लगे तो खेत का मालिक रामसिंह समझ गया कि कोई बैंगन चुराकर ले जाता है, उसे पकड़ना चाहिए। रामसिंह झाड़ियों में छिपकर बैठ गया। कुछ ही देर में तिवारी जी आ पहुँचे। खेत की ओर मुँह करके बोले, "खेत, ओ खेत!"

फिर खेत की ओर से स्वयं बोले, "क्या कहते हो तिवारी जी?"

"बैंगन ले लूँ दो-चार?" फिर खेत की ओर से बोले, "हाँ, हाँ! ले लो दस-बारह।" जैसे ही तिवारी जी बैंगन तोड़कर ले जाने लगे, खेत का मालिक सामने आ गया।

"ठहरो तिवारी! ये बैंगन किससे पूछकर तोड़े?"

तिवारी जी सकपकाकर बोले, "खेत से पूछकर लिए हैं?"

रामसिंह को बड़ा क्रोध आया। उसने आव देखा न ताव और तिवारी जी को बाँह से पकड़ लिया। खेत के कोने में एक कुआँ था। वह तिवारी जी को खींचता हुआ वहाँ ले गया। उसने तिवारी जी की कमर में रस्सा बाँधा और तिवारी जी को कुएँ में उतारने लगा।

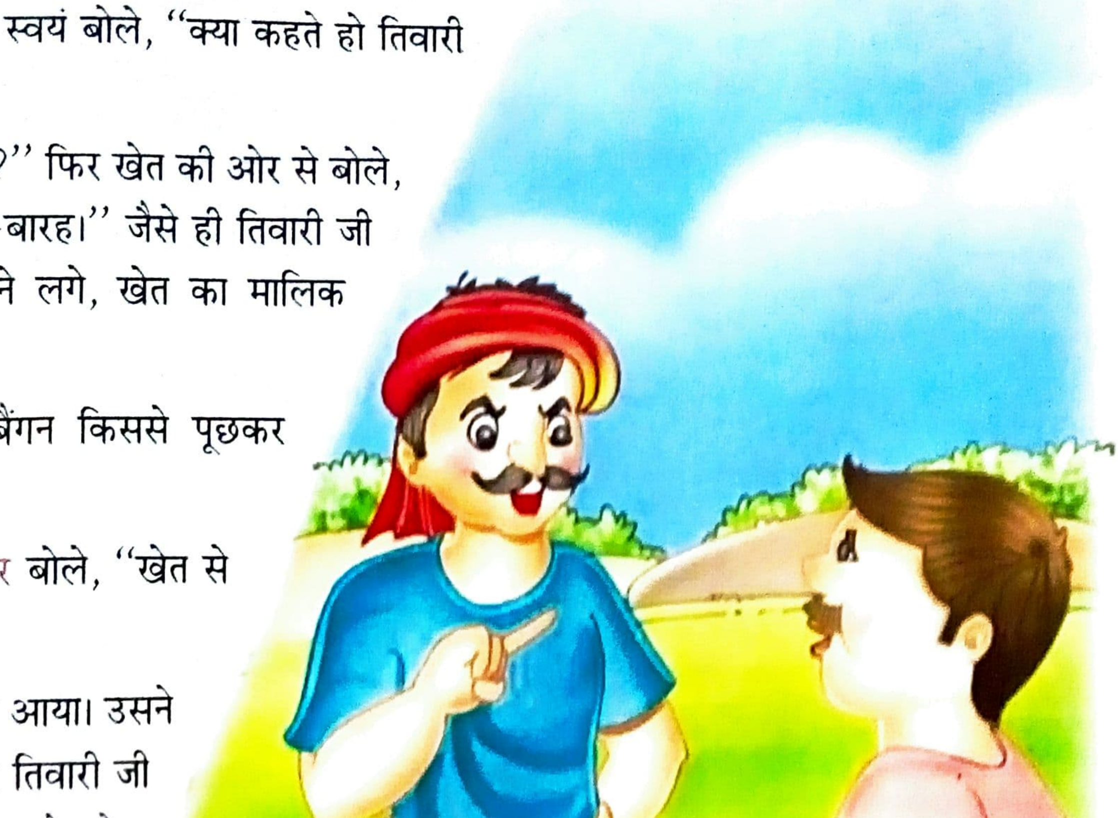

शब्द-अर्थ

सकपकाकर = घबराकर (Frightened) क्रोध = गुस्सा (Anger)

मुहावरा

आव देखा न ताव — बिना कुछ सोचे-समझे

तिवारी जी भय से काँप रहे थे। रामसिंह बोला, "कुएँ, ओ कुएँ!"

फिर रामसिंह स्वयं ही कुआँ बनकर बोला, "क्या कहते हो रामसिंह?"

रामसिंह बोला, "तिवारी को डुबकियाँ दिला दूँ दो-चार?"

फिर कुएँ की ओर से बोला, "हाँ, हाँ! दिला दो दस-बारह।"

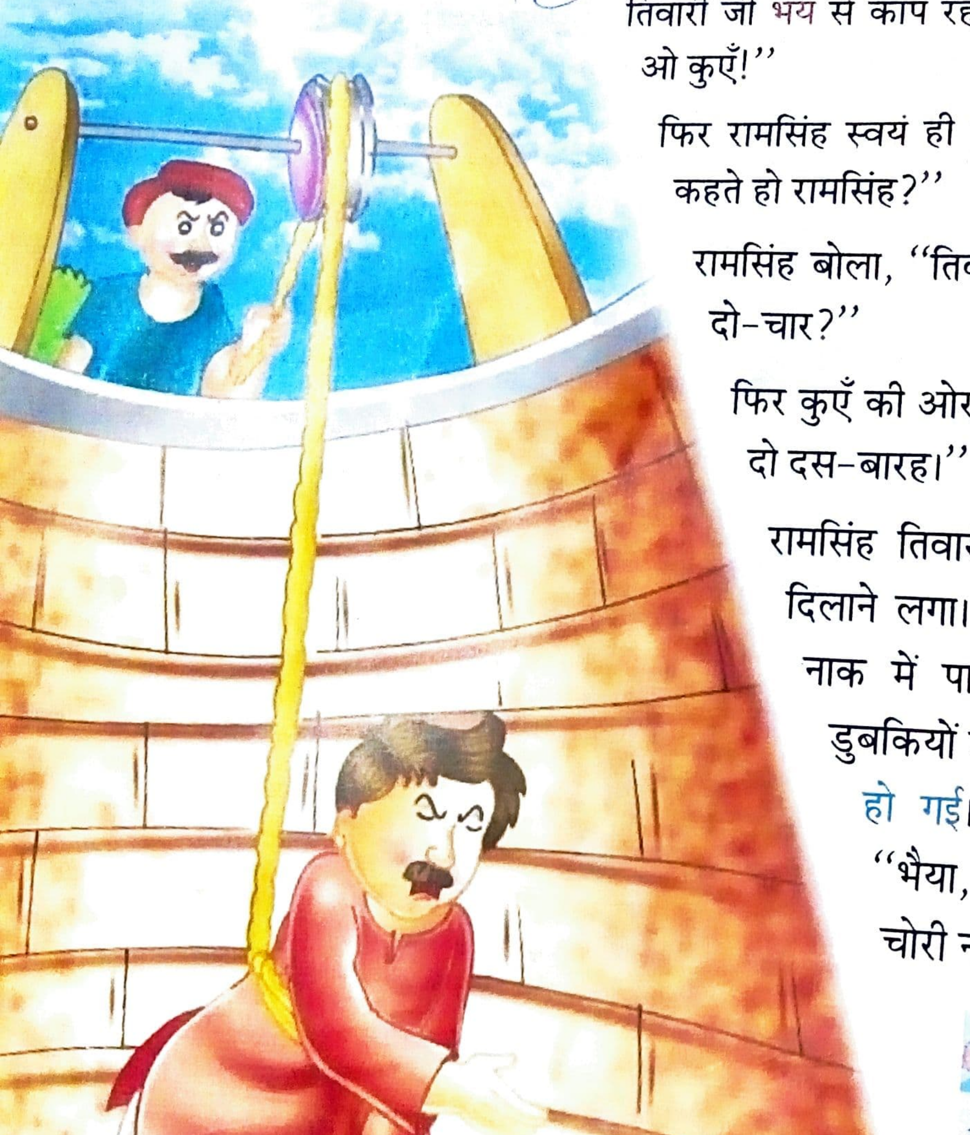

रामसिंह तिवारी को पानी में डुबकियाँ दिलाने लगा। तिवारी जी के मुँह और नाक में पानी चला गया। दो-तीन डुबकियों में ही उनकी हालत पतली हो गई। वे गिड़गिड़कर बोले, "भैया, मुझे छोड़ दो। अब कभी चोरी नहीं करूँगा।"

कल्पना करो

अगर खेत में कुआँ न होता तो रामसिंह गणपत तिवारी को सबक सिखाने के लिए क्या करता?

रामसिंह को उन पर दया आ गई। उसने तिवारी जी को छोड़ दिया। उस दिन के बाद तिवारी जी ने बैंगन चोरी करना छोड़ दिया।

अर्थ

...ड़गिड़ाकर = प्रार्थना करते हुए (Pleading)

...s)

मुहावरा

हालत पतली होना

Class - 4 Sub - Hindi

PAGE NO
DATE

पाठ - 6

बैंगन ले लूँ दो - चार ?

सारांश - यह एक हास्य कथा है। इस हास्य कथा मे तीन कथा के पात्र है तिवारी जी, उनकी पत्नी और खेत के मालिक रामसिंह जी। तिवारी जी अपनी पत्नी के कहने पर बैंगन लाने जाते है और उन्हें एक खेत में बैंगन दिखाई देते है। वहाँ से वे बिना किसी से पूछे बैंगन लाकर पत्नी को देते और बैंगन का भरता बनाने का कहते है। बैंगन का भरता बहुत स्वादिष्ट लगता है। तो तिवारी जी कई बार बिना किसी से पूछे खेत से बैंगन ला लेते है। बैंगन की कमी को देखकर खेत का मालिक समझ जाता है कि कोई उसके खेत से बैंगन चुरा रहा है। एक दिन वे झाड़ियों में छिपकर देखने लगे कि तिवारी जी उनके खेत से बैंगन चोरी करके ले जा रहे है तभी खेत के मालिक वहा आए और उन्होनें तिवारी जी को पकड़ लिया। उन्होनें तिवारी जी से पूछा किससे पूछकर बैंगन तोड़े है। तो तिवारी जी ने कहा -

"मैंने तो खेत से पूछा था"। इस पर खेत के मालिक को बहुत क्रोध आया और उन्होनें तिवारी जी को एक रस्सी से बांधकर कुएँ में डुबकियाँ लगवाने लगा। तिवारी जी ने अपनी गलती मानी और उस दिन के बाद उन्होनें चोरी करना छोड़ दिया।

PAGE NO.:
DATE: / /

कुछ महत्वपूर्ण बातें

① गणपत तिवारी रामपुर गाँव में रहते थे।

② तिवारी जी अपनी पत्नी के कहने पर बैंगन लाने जाते है।

③ गाँव के बाहर एक नदी बहती है।

④ तिवारी जी गाँव में रहते थे।

⑤ जो सबजी गाँव में नही मिलती उसे चंदनपु कस्बे से लाना पड़ता था।

⑥ रामसिंह के खेत के कोने में कुआँ था।

(1) पाठ - 6 Class - 4 Sub- ~~Hindi~~ हिन्दी

बैंगन लो चूँ दो-चार ?

शब्दार्थ -

स्वामी	-	मालिक
स्वयँ	-	अपने आप
सकपकाकर	-	घबराकर
क्रोध	-	गुस्सा
भय	-	डर
गिड़गिड़ाकर	-	प्रार्थना करते हुए
दया	-	रहम

अभ्यास - कार्य

प्र.1 सही विकल्प चुनकर लिखो।

(क) जो सब्जी गाँव के खेतों में नही होती थी, उसे गाँववाले कहाँ से लाते थे ?

(क) रत्नापुर से (ख) चंदनपुर से (ग) विजयपुर से

उत्तर चंदनपुर से

(ख) रामसिंह के खेत के कोने में क्या था?
(क) पेड़ (ख) नल (ग) कुआँ
उत्तर कुआँ

प्र.2 खाली स्थान भरो।

(i) तिवारी जी की पत्नी को बैंगन खाने की इच्छा हुई। (तिवारी जी / रामसिंह)

(ii) गाँव के बाहर एक नदी बहती थी। (नाली / नदी)

(iii) तिवारी जी ने बैंगन चोरी करना छोड़ दिया। (बैंगन / आलू)

(iv) गणपत तिवारी जी गाँव में रहते थे। (गाँव / शहर)

प्र.3 निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखो :—
(क) गणपत तिवारी कौन-से गाँव में रहते थे?
उत्तर गणपत तिवारी रामपुर गाँव में रहते थे।

(ख) तिवारी जी की पत्नी ने उनसे क्या लाने को कहा?
उत्तर तिवारी जी की पत्नी ने उनसे बैंगन लाने को कहा।

(ग) तिवारी जी ने बैंगन किससे माँगे ?
उत्तर तिवारी जी ने बैंगन खेत से माँगे।

(घ) खेत का मालिक रामसिंह तिवारी जी पर क्यों गुस्सा हुआ ?
उत्तर तिवारी जी ने रामसिंह के खेत में से बैंगन चुराए थे, इसलिए रामसिंह जी तिवारी जी पर गुस्सा हुए।

(ङ) रामसिंह ने तिवारी जी को क्या सजा दी ?
उत्तर रामसिंह ने तिवारी जी को कुएँ के पानी में डुबकियाँ लगवाई।

व्याकरण

विशेषण - संज्ञा अथवा सर्वनाम की विशेषता बताने वाले शब्दों को विशेषण कहते हैं। विशेषण के चार भेद होते हैं —

(1) गुणवाचक विशेषण - ये संज्ञा या सर्वनाम के गुण - दोष प्रकट करते हैं
जैसे - मीठा, कड़वा, बुरा, सुंदर आदि।

(2) परिमाणवाचक विशेषण - ये वस्तु की मात्रा अथवा नाप - तौल का बोध कराते हैं।
जैसे - थोड़ा, अधिक, मीटर आदि।

(3) संख्यावाचक विशेषण - ये वस्तु की निश्चित संख्या का बोध कराते हैं;
जैसे - पाँच, दस, बीस, आदि।

(4) संकेतवाचक विशेषण - ये संज्ञा अथवा सर्वनाम की ओर संकेत करते हैं;
जैसे - यह, वह, वहाँ आदि।

प्र.। निम्नलिखित वाक्यों में विशेषणों को रेखांकित करके उनका भेद लिखो -

(1) बैंगन का भरता बहुत <u>स्वादिष्ट</u> था।
<u>उत्तर</u> गुणवाचक विशेषण

(2) <u>वहाँ</u> मेरा मित्र रहता है।
<u>उत्तर</u> संकेतवाचक विशेषण

(3) तिवारी जी ने <u>आठ</u> बैंगन तोड़ लिए।
<u>उत्तर</u> संख्यावाचक विशेषण

(4) गाँव से <u>थोड़ी</u> दूर एक नदी बहती थी।
<u>उत्तर</u> परिमाणवाचक विशेषण

PAGE NO.:
DATE: / /

प्र.1 निम्नलिखित शब्दों की शुद्ध वर्तनी लिखो –

(1) करोध – क्रोध
(2) रससा – रस्सा
(3) खैत – खेत
(4) बैंगण – बैंगन
(5) सबजी – सब्जी
(6) कसबा – कस्बा